

सूरह साफ़ात - 37

سُورَةُ الصَّافَّاتِ

सूरह साफ़ात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 182 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((बस् साफ़ात)) से हुआ है जिस का अर्थ है: पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों की शपथ! इस लिये इस का नाम सूरह साफ़ात है।
- इस में आयत 1 से 10 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने पर फ़रिश्तों की गवाही प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि शैतान, फ़रिश्तों की उच्च सभा तक जाने से रोक दिये गये हैं। फिर दूसरे जीवन की दशा का वर्णन करके उन के दुष्परिणाम को बताया गया है जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजते हैं तथा अल्लाह के पूजारियों का उत्तम परिणाम बताया गया है।
- आयत 75 से 148 तक अनेक नबियों की चर्चा है जिन्होंने तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रचार करते हुये अनेक प्रकार के दुःख सहे। तथा अल्लाह ने उन्हें उन के प्रयासों का उत्तम प्रतिफल प्रदान किया।
- आयत 149 से 166 तक फ़रिश्तों के बारे में मुश्रिकों के गलत विचारों का खण्डन करते हुये फ़रिश्तों ही द्वारा यह बताया गया है कि वास्तव में वह क्या है?
- फिर सूरह की अन्तिम आयतों में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा अल्लाह की सेना अर्थात् रसूल के अनुयायियों को अल्लाह की सहायता तथा विजय की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है पंक्तिबद्ध(फ़रिश्तों) की!
2. फिर झिड़कियाँ देने वालों की!
3. फिर स्मरण करके पढ़ने वालों^[1] की!

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا

فَالرَّازِحَاتِ رَاجًّا

فَاللَّيْلِ ذُكْرًا

1 यह तीनों गुण फ़रिश्तों के हैं जो आकाशों में अल्लाह की इबादत के लिये

4. निश्चय तुम्हारा पूज्य एक ही है।
5. आकाशों तथा धरती का पालनहार,
तथा जो कुछ उन के मध्य है, और
सूर्योदय होने के स्थानों का रब।
6. हम ने अलंकृत किया है संसार (समीप)
के आकाश को तारों की शोभा से।
7. तथा रक्षा करने के लिये प्रत्येक
उध्दत शैतान से।
8. वह नहीं सुन सकते (जा कर) उच्च
सभा तक फरिश्तों की बात, तथा
मारे जाते हैं प्रत्येक दिशा से।
9. राँदने के लिये, तथा उन के लिये
स्थायी यातना है।
10. परन्तु जो ले उड़े कुछ तो पीछा
करती है उस का दहकती ज्वाला^[1]
11. तो आप इन (काफ़िरो) से प्रश्न करें
कि क्या उन को पैदा करना अधिक
कठिन है या जिन^[2] को हम ने पैदा
किया है? हम ने उन को ^[3]पैदा
किया है लेसदार मिट्टी से।
12. बल्कि आप ने आश्चर्य किया (उन

- إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ۝
رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ
الْمَشَارِقِ ۝
إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَكِبِ ۝
وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ تَارِدٍ ۝
لَّا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ وَيَقْدِرُونَ مِنْ كُلِّ
جَانِبٍ ۝
دُخُورًا لَهُمْ عَذَابٌ وَأَصِيبٌ ۝
إِلَّا مَن خَطِفٌ الْخَطْفَةِ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝
فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَن خَلَقْنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ
مِّنْ طِينٍ لَّازِبٍ ۝
بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝

पंक्तिवद्ध रहते तथा बादलों को हाँकते और अल्लाह के स्मरण जैसे कुर्आन तथा नमाज़ पढ़ने और उस की पवित्रता का गान करने इत्यादि में लगे रहते हैं।

- 1 फिर यदि उस से बचा रह जाये तो आकाश की बात अपने नीचे के शैतानों तक पहुँचाता है और वह उसे काहिनों तथा ज्योतिषियों को बताते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिला कर लोगों को बताते हैं। (सहीह बुखारी: 6213, सहीह मुस्लिम: 2228)
- 2 अर्थात् फरिश्तों तथा आकाशों को?
- 3 उन के पिता आदम (अलैहिस्सलाम) को।

के अस्वीकार पर) तथा वह उपहास करते हैं।

13. और जब शिक्षा दी जाये तो शिक्षा ग्रहण नहीं करते।

وَلَا إِذْ كُتِبَ إِلَيْكَ الْكِتَابُ ۚ

14. और जब देखते हैं कोई निशानी तो उपहास करने लगते हैं।

وَلَا إِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۚ

15. तथा कहते हैं कि यह तो मात्र खुला जादू है।

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۚ

16. (कहते हैं कि) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे, तो हम निश्चय पुनः जीवित किये जायेंगे?

أَمْ أَمِئْتَنَا وَلَكِنَّا رَأَوْنَا عِطَافًا لَّنَا الْبَعُوثُونَ ۚ

17. और क्या हमारे पहले पूर्वज भी (जीवित किये जायेंगे)?

أَوَابَاءُ الْأَوَّلُونَ ۚ

18. आप कह दें कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे।

قُلْ تَعْمَرُوا أَنْتُمْ ذُرِّيَّتُكُمْ ۚ

19. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर सहसा वह देख रहे होंगे।

فَأَمَّا هِيَ رَجَرَةٌ وَلَجْدَةٌ ۚ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۚ

20. तथा कहेंगे: हाय हमारा विनाश! यह तो बदले (प्रलय) का दिन है।

وَقَالُوا يَوَيْلَنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ۚ

21. यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठला रहे थे।

هَذَا يَوْمُ الْقُصْلِ الَّذِي كُنتُمْ بِهِ تَغْدِبُونَ ۚ

22. (आदेश होगा कि) घेर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत (बंदना) कर रहे थे।

أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۚ

23. अल्लाह के सिवा। फिर दिखा दो उन को नरक की राह।

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَأَهْدُوا لَهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُبِينٍ ۚ

24. और उन्हें रोक^[1] लो। उन से प्रश्न किया जाये।
25. क्या हो गया है तुम्हें कि एक-दूसरे की सहायता नहीं करते?
26. बल्कि वह उस दिन सिर झुकाये खड़े होंगे।
27. और एक-दूसरे के सम्मुख हो कर परस्पर प्रश्न करेंगे:^[2]
28. कहेंगे कि तुम हमारे पास आया करते थे दायें^[3] से।
29. वह^[4] कहेंगे: बल्कि तुम स्वयं ईमान वाले न थे।
30. तथा नहीं था हमारा तुम पर कोई अधिकार,^[5] बल्कि तुम स्वयं अवैज्ञाकारी थे।
31. तो सिद्ध हो गया हम पर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं।
32. तो हम ने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।
33. फिर वह सभी उस दिन यातना में साझी होंगे।

وَقَفَّوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾

مَا لَكُمْ أَنْ تَنَاصُرُونَ ﴿٢٥﴾

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُتَسَلِّمُونَ ﴿٢٦﴾

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾

قَالُوا إِنَّا كُنْتُمْ تُنَادُّونَنَا عَنْ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾

قَالُوا بَلَىٰ لَوْ كُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

وَمَا كُنَّا عَلَيْكُمْ مِنْ مُّسْلِمِينَ ﴿٣٠﴾

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾

فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾

1 नरक में झोंकने से पहले।

2 अर्थात् एक - दूसरे को धिक्कारेंगे।

3 इस से अभिप्राय यह है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आते थे अर्थात् यह विश्वास दिलाते थे कि यही मिश्रणवाद मूल तथा सत्धर्म है।

4 इस से अभिप्राय उन के प्रमुख लोग हैं।

5 देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 22।

34. हम इसी प्रकार किया करते हैं
अपराधियों के साथ।
35. यह वह है कि जब कहा जाता था उन
से कि कोई पूज्य (बंदनीय) नहीं अल्लाह
के अतिरिक्त तो वह अभिमान करते थे।
36. तथा कह रहे थे: क्या हम त्याग देने
वाले हैं अपने पूज्यों को एक उन्मत्त
कवि के कारण?
37. बल्कि वह (नबी) सच्च लाये हैं तथा
पुष्टि की है सब रसूलों की।
38. निश्चय तुम दुःखदायी यातना चखने
वाले हो।
39. तथा तुम उस का प्रतिकार (बदला)
दिये जाओगे जो तुम कर रहे थे।
40. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
41. यही हैं जिन के लिये विदित जीविका है।
42. प्रत्येक प्रकार के फल तथा वही
आदरणीय होंगे।
43. सुख के स्वर्गों में।
44. आसनों पर एक-दूसरे के सम्मुख
असीन होंगे।
45. फिराये जायेंगे उन पर प्याले प्रवाहित
पेय के।
46. श्वेत आस्वाद पीने वालों के लिये।
47. नहीं होगी उस में शारिरिक पीड़ा
और न वह उस से बहकेंगे।

إِنَّا كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾

وَيَقُولُونَ إِنَّا لَنَأْتِيَنَّكَ الشَّاعِرُ بِحُجَّتٍ ﴿٣٦﴾

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْإِلِيمِ ﴿٣٨﴾

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾

فَوَاكِهُ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾

بِضَاءٍ لَدَى الْوَشِيِّ ﴿٤٦﴾

لَا فِيهَا عُوقُولٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿٤٧﴾

48. तथा उन के पास आँखें झुकाये (सति)
बड़ी आँखों वाली (नारियाँ) होंगी।
49. वह छुपाये हुये अन्डों के मानिन्द होंगी।^[1]
50. वह एक - दूसरे से सम्मुख हो कर
प्रश्न करेंगे।
51. तो कहेगा एक कहने वाला उन में से:
मेरा एक साथी था।
52. जो कहता था कि क्या तुम (पलक
का) विश्वास करने वालों में से हो?
53. क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी
और अस्थियाँ हो जायेंगे तो क्या हमें
(कर्मों का) प्रतिफल दिया जायेगा।
54. वह कहेगा: क्या तुम झाँक कर देखने
वाले हो?
55. फिर झाँकते ही उसे देख लेगा नरक
के बीच।
56. उस से कहेगा: अल्लाह की शपथ! तुम
तो मेरा विनाश कर देने के समीप थे।
57. और यदि मेरे पालनहार का अनुग्रह
न होता तो मैं (नरक के) उपस्थितों
में होता।
58. फिर वह कहेगा: क्या (यह सहीह
नहीं है कि) हम मरने वाले नहीं हैं?
59. सिवाये अपनी प्रथम मौत के और न
हम को यातना दी जायेगी।

وَعِنْدَهُمْ قُمْحَرُ الطَّرْفِ عَيْنٌ ۝

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ لُّكُوثٌ ۝

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝

يَقُولُ أَإِنَّكَ لِمِنَ الْمُصْطَفَيْنِ ۝

أَوَلَمْ نَتَنَبَّأْكَ أَنَّكَ أَبَاوٌ عَظِيمٌ ۝

قَالَ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ مُظْلِمُونَ ۝

فَأَظْلَمَ قَرَأَهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝

قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كُنْتُ لَكَ زَيْدٌ ۝

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُخْضَرِّينَ ۝

أَفَمَا نَحْنُ بِمَبْتَلَيْنِ ۝

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝

1 अर्थात् जिस प्रकार पक्षी के पंखों के नीचे छुपे हुये अन्डे सुरक्षित होते हैं वैसे ही वह नारियाँ सुरक्षित, सुन्दर रंग और रूप की होंगी।

60. वास्तव में यही बड़ी सफलता है।
 61. इसी (जैसी सफलता) के लिये चाहिये कि कर्म करें कर्म करने वाले।
 62. क्या यह आतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष?
 63. हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।
 64. वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़ (तह) से निकलता है।
 65. उस के गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।
 66. तो वह (नरकवासी) खाने वाले हैं उस से। फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।
 67. फिर उन के लिये उस के ऊपर से खौलता गरम पानी है।
 68. फिर उन्हें प्रत्यागत होना है नरक की ओर।
 69. वास्तव में उन्होंने पाया अपने पूर्वजों को कुपथ।
 70. फिर वह उन्हीं के पदचिन्हों पर^[1] दौड़े चले जा रहे हैं।
 71. और कुपथ हो चुके हैं इन से पूर्व अगले लोगों में से अधिकतर।
 72. तथा हम भेज चुके हैं उन में सचेत

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾

لِيُمِثِلَ هَذَا قَلِيلَ عَمَلِ الْعَمَلُونَ ﴿٦١﴾

أَذَلِكَ خَيْرٌ تُزَلُّوا مِنْ شَجَرَةِ الرُّقُومِ ﴿٦٢﴾

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ﴿٦٣﴾

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾

طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ﴿٦٥﴾

فَإِنَّهُمْ لَا يَكُونُونَ مِنْهَا قَآءًا لَّئِنْ مِنْهَا لَئِنْ مِنْهُمْ لَبَطُونٌ ﴿٦٦﴾

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾

ثُمَّ إِنَّهُمْ رُجِعُهُمْ إِلَى الْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾

إِنَّهُمْ أَقْبُوا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾

فَهُمْ عَلَىٰ أَثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٧١﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ ﴿٧٢﴾

1 इस में नरक में जाने का जो सब से बड़ा कारण बताया गया है वह है नबी को न मानना, और अपने पूर्वजों के पंथ पर ही चलते रहना।

(सावधान) करने वाले।

73. तो देखो कि कैसा रहा सावधान किये हुये लोगों का परिणाम?^[1]
74. हमारे शुद्ध भक्तों के सिवा।
75. तथा हमें पुकारा नूह ने। तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।
76. और हम ने बचा लिया उस को और उस के परिजनों को घोर आपदा से।
77. तथा कर दिया हम ने उस की संतति को शेष^[2] रह जाने वालों में।
78. तथा शेष रखा हम ने उस की सराहना तथा प्रशंसा को पिछलों में।
79. सलाम (सुरक्षा)^[3] है नूह के लिये समस्त विश्ववासियों में।
80. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
81. वास्तव में वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
82. फिर हम ने जलमग्न कर दिया दूसरों को।
83. और उस के अनुयायियों में निश्चय इब्राहीम है।
84. जब लाया वह अपने पालनहार के पास स्वच्छ दिल।

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَدَرِّجِينَ ۝

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحًا فَلْيَعْمَلْ مَعْجُودُوْهُ ۝

وَنَجِّنْهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِيْنَ ۝

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِيْنَ ۝

سَلَامٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعَالَمِيْنَ ۝

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِيْنَ ۝

وَإِن مِنْ شَيْعَةٍ إِلَّا زَهِقُوا ۝

إِذْ جَاء رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝

1 अतः उन के दुष्परिणाम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

2 उस की जाति के जलमग्न हो जाने के पश्चात्।

3 अर्थात् उस की बुरी चर्चा से।

85. जब कहा उस ने अपने पिता तथा अपनी जाती से: तुम किस की इबादत (वंदना) कर रहे हो?
86. क्या अपने बनाये पूज्यों को अल्लाह के सिवा चाहते हो?
87. तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?
88. फिर उस ने देखा तारों की^[1] ओर।
89. तथा उन से कहा: मैं रोगी हूँ।
90. तो उसे छोड़ कर चले गये।
91. फिर वह जा पहुँचा उन के उपास्यों (पूज्यों) की ओर। कहा कि (वह प्रसाद) क्यों नहीं खाते?
92. तुम्हें क्या हुआ है कि बोलते नहीं?
93. फिर पिल पड़ा उन पर मारते हुये दायें हाथ से।
94. तो वह आये उस की ओर दौड़ते हुये।
95. इब्राहीम ने कहा: क्या तुम इबादत (वंदना) करते हो उस की जिसे पत्थरों से तराशते हो?
96. जब कि अल्लाह ने पैदा किया है तुम को तथा जो तुम करते हो।
97. उन्होंने कहा: इस के लिये एक (अग्निशाला का) निर्माण करो। और उसे झोंक दो दहकती अग्नि में।
98. तो उन्होंने उस के साथ षड्यंत्र रचा,

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۖ

أَفَعِمَّا إِلَهَةٌ دُونِ اللَّهِ تُرِيدُونَ ۖ

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۖ

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۖ

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۖ

فَرَاغَ إِلَى إِلَهِهِمْ فَقَالَ آلَا تَأْكُلُونَ ۖ

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۖ

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۖ

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ۖ

قَالَ تَعْبُدُونَ مَا تَشْحَتُونَ ۖ

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۖ

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُيُوتًا فَأَلْفُوهُ فِي الْجَهَنَّمَ ۖ

فَإِذْ دُؤِبِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمْ الْأَسْفَلِينَ ۖ

1 यह सोचते हुये कि इन के उत्सव में न जाने के लिये क्या बहाना करूँ।

तो हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

99. तथा उस ने कहा: मैं जाने वाला हूँ
अपने पालनहार की^[1] ओर। वह
मुझे सुपथ दर्शायेगा।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝

100. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर मुझे
एक सदाचारी (पूनीत) पुत्र।

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

101. तो हम ने शुभ सूचना दी उसे एक
सहनशील पुत्र की।

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۝

102. फिर जब वह पहुँचा उस के साथ
चलने-फिरने की आयु को, तो
इबराहीम ने कहा: हे मेरे प्रिय पुत्र!
मैं देख रहा हूँ स्वपन में कि मैं तुझे
बध कर रहा हूँ। अब तू बता कि
तेरा क्या विचार है? उस ने कहा: हे
पिता! पालन करें जिस का अदेश
आप को दिया जा रहा है। आप
पायेंगे मुझे सहनशीलों में से यदि
अल्लाह की इच्छा हुई।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَؤُا إِنِّي أَرَىٰ فِي
الْمَنَامِ إِنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَأْمُرُ قَالَ يَا بَنِيَّ
أَفْعَلْ مَا تَأْمُرُ سَجَدْتُ لِإِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ
الصَّبْرِ ۝

103. अन्ततः जब दोनों ने स्वयं को अर्पित
कर दिया, और उस (पिता) ने उसे
गिरा दिया माथे के बल।

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝

104. तब हम ने उसे आवाज़ दी कि हे
इब्राहीम!

وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝

105. तू ने सच्च कर दिया अपना स्वप्न।
इसी प्रकार हम प्रति फल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كَذَّاكَ تَجْرَى
الْمُحْسِنِينَ ۝

106. वास्तव में यह खुली परीक्षा थी।

إِنَّ هَذَا لَهُوَالْبَلَاءُ الْمُبْتَلَىٰ ۝

107. और हम ने उस के मुक्ति- प्रतिदान

وَقَدْ يُنَبِّئُكَ بِذِٰلِكَ عَظِيمٍ ۝

1 अर्थात ऐसे स्थान की ओर जहाँ अपने पालनहार की इबादत कर सकूँ।

के रूप में प्रदान कर दी एक महान्^[1]
बलि।

108. तथा हम ने शेष रखी उस की शुभ
चर्चा पिछलों में।

وَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

109. सलाम है इब्राहीम पर।

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝

110. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

111. निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले
भक्तों में से था।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

112. तथा हम ने उसे शुभसूचना दी
इसहाक नबी की, जो सदा-चारियों
में^[2] होगा।

وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝

113. तथा हम ने बरकत
(विभूति) अवतरित की उस पर
तथा इसहाक पर। और उन दोनों
की संतति में से कोई सदाचारी
है और कोई अपने लिये खुला
अत्याचारी।

وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا الْحُسَيْنُ
وَعَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ سَلَامٌ ۝

114. तथा हम ने उपकार किया मूसा
और हारून पर।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

115. तथा मुक्त किया दोनों को और उन

وَجَعَلْنَاهُمَا قَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝

1 यह महान् बलि एक मेंढा था। जिसे जिब्रील (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्वर्ग से भेजा गया। जो आप के प्रिय पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के स्थान पर बलि दिया गया। फिर इस विधि को प्रलय तक के लिये अल्लाह के समिप्य का एक साधन तथा इंदुल अज्हा (बकरईद) का प्रियवर कर्म बना दिया गया। जिसे संसार के सभी मुसलमान इंदुल अज्हा में करते हैं।

2 इस आयत से विद्वित होता है कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस बलि के पश्चात् दूसरे पुत्र आदरणीय इसहाक की शुभ सूचना दी गई। इस से ज्ञान हुआ कि बलि इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की दी गई थी। और दोनों की आयु में लग-भग चौदह वर्ष का अन्तर है।

कि जाति को घोर व्यग्रता से।

116. तथा हम ने सहायता की उन की
तो वही प्रभावशाली हो गये।

117. तथा हम ने प्रदान की दोनों को
प्रकाशमय पुस्तक (तौरात)।

118. और हम ने दर्शाई दोनों को सीधी
डगर।

119. तथा शेष रखी दोनों की शुभ चर्चा
पिछलों में।

120. सलाम है मूसा तथा हारून पर।

121. हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

122. वस्तुतः वह दोनों हमारे ईमान वाले
भक्तों में थे।

123. तथा निश्चय इल्य़ास नबियों में से
था।

124. जब कहा उस ने अपनी जाति से:
क्या तुम डरते नहीं हो?

125. क्या तुम बअल (नामक मूर्ति) को
पुकारते हो? तथा त्याग रहे हो
सर्वोत्तम उत्पत्ति कर्ता को?

126. अब्राह ही तुम्हारा पालनहार है,
तथा तुम्हारे प्रथम पूर्वजों का
पालनहार है।

127. अन्ततः उन्होंने झुठला दिया उस
को। तो निश्चय वही (नरक में)
उपस्थित होंगे।

وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۝

وَاتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُبِينَ ۝

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۝

سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَالَأَتَقُونُ ۝

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۝

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَنَّهُمْ مُحْضَرُونَ ۝

128. किन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्ता।
 129. तथा शेष रखी हम ने उसकी शुभ चर्चा पिछलों में।
 130. सलाम है इलयासीन^[1] पर।
 131. वास्तव में हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
 132. वस्तुतः वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
 133. तथा निश्चय लूत नबियों में से था।
 134. जब हम ने मुक्त किया उस को तथा उस के सब परिजनों को।
 135. एक बुढ़िया^[2] के सिवा, जो पीछे रह जाने वालों में थी।
 136. फिर हम ने अन्यो को तहस नहस कर दिया।
 137. तथा तुम^[3] गुज़रते हो उन (की निर्जन बस्तियों) पर प्रातः के समय।
 138. तथा रात्रि में। तो क्या तुम समझते नहीं हो?
 139. तथा निश्चय यूनस नबियों में से था।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝

وَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنَّ لُوطًا لِّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ۝

ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ۝

وَالَكُمْ لَتَمُرُّوا عَلَيْهِمْ مُّضِحِينَ ۝

وَبِالْأَيْلِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

وَإِنَّ يُونُسَ لِمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

1 इलयासीन: इलयास ही का एक उच्चारण है। उन्हें अन्य धर्म ग्रन्थों में इलया भी कहा गया है।

2 यह लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी थी।

3 मक्का वासियों को संबोधित किया गया है।

140. जब वह भाग^[1] गया भरी नाव की ओर।
141. फिर नाम निकाला गया तो वह हो गया फेंके हुआओं में से।
142. तो निगल लिया उसे मछली ने, और वह निन्दित था।
143. तो यदि न होता अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करने वालों में।
144. तो वह रह जाता उस के उदर में उस दिन तक जब सब पुनः जीवित किये^[2] जायेंगे।
145. तो हम ने फेंक दिया उसे खुले मैदान में और वह रोगी^[3] था।
146. और उगा दिया उस^[4] पर लताओं का एक वृक्ष।
147. तथा हम ने उसे रसूल बना कर भेजा एक लाख बल्कि अधिक की ओर।
148. तो वह ईमान लाये। फिर हम ने उन्हें सुख - सुविधा प्रदान की एक समय^[5] तक।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلِّ الْمَشْجُونِ ۝

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝

فَالْتَمَتَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۝

لَكُنَّا فِي بَاطِنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۝

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ۝

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝

فَأَمِنُوا فَمَنْحَهُمْ إِلَى حِينٍ ۝

1 अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर से नगर वासियों को यातना के आने की सूचना देकर निकल गये। और नाव पर सवार हो गये। नाव सागर की लहरों में घिर गई। इसलिये बोझ कम करने के लिये नाम निकाला गया। तो यूनस (अलैहिस्सलाम) का नाम निकला और उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया।

2 अर्थात प्रलय के दिन तक। (देखिये: सूरह अम्बिया, आयत: 87)

3 अर्थात निर्बल नवजात शिशु के समान।

4 रक्षा के लिये।

5 देखिये: सूरह यूनस।

149. तो (हे नबी!) आप उन से प्रश्न करें कि क्या आप के पालनहार के लिये तो पुत्रियाँ हों और उन के लिये पुत्र?
150. अथवा क्या हम ने पैदा किया है फ़रिश्तों को नारियाँ। और वह उस समय उपस्थित^[1] थे?
151. सावधान! वास्तव में वह अपने मन से बना कर यह बात कह रहे हैं।
152. कि अल्लाह ने संतान बनाई है। और निश्चय वह मिथ्या भाषी हैं।
153. क्या अल्लाह ने प्राथमिकता दी है पुत्रियों को पुत्रों पर?
154. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय दे रहे हो?
155. तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
156. अथवा तुम्हारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है?
157. तो अपनी पुस्तक लाओ यदि तुम सत्यवादी हो?
158. और उन्होंने बना दिया अल्लाह तथा जिन्नों के मध्य वंश-संबंध। जब कि जिन्न स्वयं जानते हैं कि वह अल्लाह के समक्ष निश्चय उपस्थित किये^[2] जायेंगे।

فَاسْتَفْتِهِمُ الرِّبَّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾

أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ إَفْكِهمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾

فَاتُوايَكُنْ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٥٧﴾

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نَسْبًا وَلَقَدْ عَلِمَتِ
الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾

1 इस में मक्का के मिश्रणवादियों का खण्डन किया जा रहा है जो फ़रिश्तों को देवियाँ तथा अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि वह स्वयं पुत्रियों के जन्म को अप्रिय मानते थे।

2 अर्थात् यातना के लिये। तो यदि वे उस के संबंधी होते तो उन्हें यातना क्यों देता?

159. अल्लाह पवित्र है उन गुणों से जिस का वह वर्णन कर रहे हैं।

160. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त^[1]

161. तो निश्चय तुम तथा तुम्हारे पूज्य।

162. तुम सब किसी एक को भी कुपथ नहीं कर सकते।

163. उस के सिवा जो नरक में झोंका जाने वाला है।

164. और नहीं है हम (फ़रिश्तों) में से कोई परन्तु उस का एक नियमित स्थान है।

165. तथा हम ही (आज्ञापालन के लिये) पंक्तिबद्ध हैं।

166. और हम ही तस्बीह (पवित्रता गान) करने वाले हैं।

167. तथा वह (मुश्रिक) तो कहा करते थे कि:

168. यदि हमारे पास कोई स्मृति (पुस्तक) होती जो पहले लोगों में आई...

169. तो हम अवश्य अल्लाह के शुद्ध भक्तों में से हो जाते।

170. (फिर जब आ गयी) तो उन्होंने कुर्आन के साथ कुफ़्र कर दिया अतः शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

171. और पहले ही हमारा वचन हो चुका

سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٥٩﴾

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾

فَاتَّكُم مَّا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾

مَّا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَعْتِينَ ﴿١٦٢﴾

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالٍ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾

وَمَامِنًا إِلَّا إِلَهُ مَقَامٌ مَعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾

وَأَنَا لَنَحْنُ الصَّافُونَ ﴿١٦٥﴾

وَأَنَا لَنَحْنُ الْمُتَسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾

وَأَن كَانُوا يَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾

لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾

فَلَقَرَأُوا بِهِ فَنَحَوُّهُمْ يُعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾

1 वह अल्लाह को ऐसे दुर्गुणों से युक्त नहीं करते।

है अपने भेजे हुये भक्तों के लिये।

172. कि निश्चय उन्हीं की सहायता की जायेगी।

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٢﴾

173. तथा वास्तव में हमारी सेना ही प्रभावशाली (विजयी) होने वाली है।

وَأَنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾

174. तो आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾

175. तथा उन्हें देखते रहें। वह भी शीघ्र ही देख लेंगे।

وَأَبْصِرْهُمْ فَهُمْ يَصِيرُونَ ﴿١٧٥﴾

176. तो क्या वह हमारी यातना की शीघ्र माँग कर रहे हैं।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾

177. तो जब वह उतर आयेगी उन के मैदानों में तो बुरा हो जायेगा सावधान किये हुआँ का सवेरा।

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٧﴾

178. और आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾

179. तथा देखते रहें, अन्ततः वह (भी) देख लेंगे।

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُصِيرُونَ ﴿١٧٩﴾

180. पवित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे हैं।

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾

181. तथा सलाम है रसूलों पर।

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾

182. तथा सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾